Dr.Sunita Kumari,Guest Asst Prof,Dept of H.Sc
SNSRKS College, Saharsa

Part-III(H)

Dt.18/02/2022

Audio-Visual Aids
श्रव्य-दृश्य सामग्री

Ques:- श्रव्य सामग्री एवं दृश्य सामग्री के बारे में लिखें
या, श्रव्य-दृश्य सामग्री क्या है, उनके विभिन्न प्रकारों का वर्णन करें।
या, प्रसार शिक्षण के विभिन्न साधनों का वर्गीकरण तथा वर्णन प्रस्तुत करें।
या विभिन्न प्रकार के शिक्षण साधन (Teaching aids) का वर्णन करें।

Ans:- शिक्षण एक जटिल उद्देश्योन्मुख एवं सृजनात्मक प्रक्रिया है, अर्थात् शिक्षण में अध्यापक छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए अपने विचार छात्रों तक पहुँचाने का प्रयास करता है। वे विचार छात्रों तक स्पष्ट रूप से पहुँच जाए इसके लिए शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया को सफल, सरल, रोचक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग करता है, जैसे - चित्र, चार्ट, मानचित्र, मॉडल, वास्तविक पदार्थ, टेपरिकॉर्डर, प्रोजेक्टर आदि। ये सभी साधन शिक्षण में सहायक साधन के नाम से जाने जाते हैं।

प्रसार शिक्षा एक बहुआयामी शिक्षा है। अर्थात् प्रसार शिक्षा में सामान्यतः जनता को प्रेरित करके उसे कार्य पर लगाया जाता है जिससे वो अपना स्थाई विकास कर सके। प्रसार में संचार का महत्वपूर्ण स्थान है। संचार में "विचारों का संचार" करना बहुत जरूरी कार्य है। इसके लिए विभिन्न शिक्षण सामग्री का उपयोग किया जाता है।

महान शिक्षा विदों ने संचार में श्रव्य-दृश्य साधनों के प्रयोग की अनुशंसा की है। वस्तुतः इनके प्रयोग से शिक्षण को अधिक रुचिकर तथा प्रभावी बनाना संभव होता है। दृश्य-श्रव्य साधन अनुभव को सार्थक बनाते हैं।

दृश्य-श्रव्य साधन विचार, प्रक्रिया, पद्धति अथवा व्यवसाय का सही बिम्ब बनाने में सहायक होते हैं। सीधा अनुभव होने से उन्हें कई बात-विचार हमेशा याद रहते हैं।

यह एक मनोवैज्ञानिक पहलू है तथा इससे शिक्षण कार्य को संबल मिलता है।

दुर्गा प्रसाद शर्मा के अनुसार :- दृश्य-श्रव्य साधनों के द्वारा बालक देखता है, सुनता है, उनका स्पर्श करता है जिससे उत्सुकता होती है, और इसलिए देखकर सीखना (Seeing is believing) का प्रसार शिक्षा का मूल मंत्र और प्रमुख सिद्धांत पूरा होता है।

डेन्ट के अनुसार :- जो सामग्री कक्षा में या किसी भी शिक्षण विधि में लिखित या मौखिक शब्दों को दृश्य बनाकर समझाने में सहायक होती है उसे ही दृश्य-श्रव्य सामग्री कहते हैं।

अहलूवालिया के अनुसार :- वे साधन जो विचारों को आँख तथा कानों के द्वारा सीखने वाले के पास पहुँचाने में सहायता करते हैं, दृश्य-श्रव्य साधन कहलाते हैं।

प्रसार शिक्षण साधनों का वर्गीकरण या दृश्य श्रव्य सामग्री का वर्गीकरण (Classification of Types of Audio-Visual Aids)-

(a) श्रव्य सामग्री :- श्रव्य सामग्री वह शिक्षण साधन है जो केवल सुनाई देता है, दिखाई नहीं देता है, जैसे- रेडियो, टेलीफोन, लाउडस्पीकर.

(b) दृश्य सामग्री :- दृश्य सामग्री वह शिक्षण साधन है जो केवल दिखाई देता है सुनाई नहीं देता है जैसे - पोस्टर, फोटोग्राफ, चार्ट, कैलेंडर, कठपुतली, श्यामपट।

(c) दृश्य-श्रव्य सामग्री :- वह शिक्षण साधन है जो दिखाई देता है और सुनाई भी देता है, जैसे- टेलीविजन, फिल्म, ड्रामा, जब कोई नया व्यंजन बनाने का प्रदर्शन करना होता है तो उस कार्य को करके दिखाया जाता है तथा बोला भी जाता है कि कौन कार्य किस प्रकार किया जाता है? जिसमें दृश्य-श्रव्य सामग्री, जैसे- टेलीविजन और वीडियो कैमरे का व्यवहार किया जाता है। कुछ मुख्य श्रव्य-दृश्य शिक्षण सामग्रियों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है —

(1) सामान्य चित्र :- प्रसार-शिक्षण की सहायक सामग्री के लिए विभिन्न प्रकार के चित्र अपनाए जाते हैं। जिनके द्वारा अनेक उपयोगी तथ्यों को दर्शाया जा सकता है जैसे- संतुलित आहार, स्वच्छ पानी के स्रोत, व्यायाम के लाभ तथा

शारीरिक सफाई आदि तथ्यों को चित्रों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।

प्रसार शिक्षण के लिए चित्रों का चुनाव करते समय कुछ बातों का अनिवार्य रूप से ध्यान रखना चाहिए। चित्रों को उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। जहाँ तक हो सके चित्र सरल तथा स्पष्ट होने चाहिए। चित्र आकर्षक होने चाहिए तथा उनमें उसी तथ्य को प्रधानता दी जानी चाहिए जो मुख्य सूचना हो।

(2.) मॉडल या नमूने :- प्रसार शिक्षण के लिए चित्र के ही समान कुछ मॉडल या नमूने भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं। मॉडल अनेक प्रकार के हो सकते हैं। लकड़ी, धातु थर्मोकोल शीट अथवा प्लाई बोर्ड से बनाए जा सकते हैं। मिट्टी या फ्रेंच चॉक से भी मॉडल बनाए जाते हैं। मॉडल की विशेषता यह होती है कि वे त्रिआयामीय होते हैं अतः उनसे तथ्यों को अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाया जा सकता है।

मॉडल का निर्माण चित्रों की तुलना में कठिन होता है तथा चित्रों की तुलना में इन पर खर्च भी अधिक होता है।

(3.) ग्राफ :- चित्र एवं मॉडलों की ही भाँति प्रसार शिक्षण के लिए ग्राफ भी इस्तेमाल किए जाते हैं। ग्राफ द्वारा किसी भी विषय के संबंध में आँकड़ों को बहुत ही व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

ग्राफों द्वारा विभिन्न तथ्यों के पारस्परिक संबंधों को सरलता से दर्शाया जा सकता है, जैसे-जैसे गाँवों में सफाई बढ़ती है, वैसे-वैसे बीमारियों की दर घटती जाती है। ग्राफ द्वारा तथ्यों का विशुद्ध प्रदर्शन होता है, किसी भी तथ्य की स्पष्ट व्याख्या एवं विवेचन में ग्राफ सहायक होते हैं। इन सब सुविधाओं के होते हुए भी ग्राफ पर अधिक खर्च नहीं होता है।

(4.) ब्लैक बोर्ड :- प्रसार शिक्षण की दृश्य सामग्री में ब्लैक बोर्ड का भी विशेष महत्व एवं उपयोग होता है। बोर्ड लकड़ी, रेक्सीन अथवा कपड़े का बना होता है। इस पर सफेद अथवा रंगीन चॉक से लिखा जा सकता है जिसे जब चाहे मिटाया भी जा सकता है। इस प्रकार साक्षर लोगों को कोई सूचना प्रदान करने के लिए ब्लैक बोर्ड

पर सिखा जा सकता है तथा निरक्षर लोगों को शिक्षित करने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। ब्लैक बोर्ड एक सस्ता साधन है तथा इसे कहीं भी सरलता से इस्तेमाल किया जा सकता है।

(5) प्रोजेक्टर तथा स्लाइड्स :— प्रसार शिक्षण के लिए उपयोगी जानेवाली दृश्य सामग्री में प्रोजेक्टर तथा स्लाइड्स का भी विशेष स्थान है। प्रोजेक्टर एक ऐसा यंत्र है जो बिजली से चलता है। इसमें कुछ लैंस लगे होते हैं। इसमें स्लाइड्स को रखने पर उनका बड़ा चित्र पर्दे पर दिखाई देता है। सामान्य रूप से इसका उपयोग रात के समय ही किया जाता है। स्लाइड्स द्वारा विभिन्न तथ्यों का बड़ी सरलता से प्रदर्शित किया जा सकता है।

(6) पुस्तकें एवं अन्य छपी हुई सामग्री :— पुस्तकें तथा अन्य छपी हुई सामग्री भी शिक्षण के दृश्य साधनों में सम्मिलित है। इस सामग्री का उपयोग केवल साक्षर व्यक्तियों को ही शिक्षित करने में किया जा सकता है। इनकी अपनी सीमा यह है कि इनमें केवल वही लाभान्वित हो सकते हैं जो साक्षर हों।

(7) रेडियो :— शिक्षण के श्रव्य साधनों में सर्वोत्तम रेडियो है। रेडियो से आज हर कोई परिचित है। रेडियो पर होने वाले ~~प्रसार~~ प्रसारणों द्वारा एक साथ लाखों-करोड़ों व्यक्ति लाभान्वित हो सकते हैं।

महिलाओं को, कृषकों को तथा सामान्य ग्रामीण जनता को शिक्षित करने में रेडियो विशेष रूप से सहायक है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले ग्रामीण महिलाओं के कार्यक्रम, बच्चों के कार्यक्रम, कृषि-चर्चा, स्वास्थ्य प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध होते हैं।

(8) टेपरिकॉर्डर :— टेपरिकॉर्डर भी श्रव्य साधन है। किसी भी सूचना या जानकारी को टेप में भर लिया जाता है। इसके बाद जब चाहें जहाँ उसे सुनाया जा सकता है। गाँवों में चौपाल पर, महिलाओं के मिलने-जुलने के स्थल पर या पनघट कुओं के स्थल पर टेपरिकॉर्डर बजाकर उपयोगी जानकारी का प्रसार किया जा सकता है।

(9) सिनेमा :— सिनेमा या चलचित्र एक ऐसा साधन है जो दृश्य एवं श्रव्य दोनों का संगम है। इसके दो प्रकार हो सकते हैं —

(i) कुछ ऐसी फिल्मों का निर्माण हो जो शुद्ध रूप से शिक्षण के लिए ही हो।

(ii) साधारण मनोरंजन फिल्म के बीच बीच में ऐसी जानकारी समाविष्ट हो जो शिक्षाप्रद हो। जैसे – फिल्म के बीच-बीच में स्वास्थ्य संबंधी जानकारी नए उपकरणों की जानकारी, कुप्रथाओं की हानियों की जानकारी तथा अन्य उपयोगी सूचनाएं दी जा सकती हैं। इसका लाभ यह है कि एक साथ अनेक व्यक्ति इससे लाभान्वित होते हैं।

(10) **दूरदर्शन** :– सिनेमा या चलचित्र का ही एक दूसरा रूप दूरदर्शन या टेलीविजन है। यह भी शिक्षण का श्रव्य दृश्य साधन है इसके द्वारा भी उसी प्रकार से शिक्षण का कार्य किया जा सकता है, जिस प्रकार से सिनेमा द्वारा किया जाता है। अंतर यह है कि इसके द्वारा घर या चौपाल पर बैठकर लाभ उठाया जा सकता है। कहीं जाना नहीं पड़ता है।

आज दूरदर्शन काफी लोकप्रिय हो रहा है तथा देश के अधिकांश भागों में इसकी सुविधा उपलब्ध है।

(11) **कठपुतली** :– परंपरागत रूप से कठपुतली का प्रदर्शन मनोरंजन के लिए होता आया है, परन्तु मनोरंजन के इस साधन को शिक्षण के साधन के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इस कला में कुछ लकड़ी, कपड़े अथवा अन्य साधनों द्वारा गुड़िया-गुड्डे बनाए जाते हैं तथा उन्हें धागों के माध्यम से नचाया जाता है। इसके साथ ही गीत गाए जाते हैं या कहानी कही जाती है। इनके द्वारा सामाजिक बुराइयों की निंदा की जा सकती है तथा समाज-सुधार के उपाय भी सुझाए जा सकते हैं। नशाबंदी, दहेज विरोध, स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों का विरोध आदि का शिक्षण कठपुतलियों के माध्यम से सफलतापूर्वक किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षण के लिए यह एक उत्तम साधन है।